REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
हिंदी
शिक्षण अधिगम सामग्री
LIVE
08-01-2025 11:00 AM

- पाठ्यपुस्तकें बालकों की शिक्षा की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण एवं सर्वोपयोगी साधन हैं। पाठ्य विषय, शैक्षणिक उद्देश्य तथा कक्षा-शिक्षण की दृष्टि से उपयुक्त सामग्री का चयन और क्रमायोजन करते हुए जिस पुस्तक की रचना की जाती है। इसे पाठ्यपुस्तक कहते हैं। सुविचारित एवं सुनियोजित रूप में तैयार की गई अच्छी पाठ्यपुस्तकों का बालकों की शिक्षा तथा राष्ट्र एवं राष्ट्र के निवासियों के भाग्य निर्माण में निश्चित ही बहुत बड़ा योगदान है।

शिक्षण अधिगम सामग्री -

यह सामग्री जिसका उपयोग शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया को रोचक और व्यावहारिक बनाने के लिए किया जाता है। यह सामग्री छात्रों के अनुभव और ज्ञान को बढ़ाने में सहायक होती है।

शिक्षण अधिगम सामग्री का महत्व :-

(i)- अधिगम में रुचि बढ़ाना -

(सीखना) चित्र, मॉडल, ऑडियो, विजुअल सामग्री आदि से छात्रों की रुचि बढ़ती है।

② - जटिल विषयों को सरल बनाना -
अमूर्त (अदृश्य) या कठिन अवधारणाओं को समझने में सहायता मिलती है।

③ - विविध शिक्षण शैलियों के लिए उपयुक्त -
(दृश्य, श्रव्य, अनुभावात्मक) के लिए प्रभावी।

④ - याद रखने में सहायता -
उदाहरणों और व्याख्याओं के माध्यम से दी गई जानकारी लम्बे समय तक याद रहती है।

- प्राचीन काल में शिक्षा व्याख्यान- प्रणाली से प्रदान की जाती थी। शिक्षक बोलता था तथा छात्र सुनता था। धीरे-धीरे पुस्तक लेखन व मुद्रण से पुस्तक रचना का कार्य प्रारम्भ हुआ। भाषा की पाठ्य-पुस्तक की सबसे पहले रचना का श्रेय कॉमेनियम को जाता है।
- पाठ्य- पुस्तकों के विषय में सी.पी. हिल ने परामर्श दिया है कि, "पाठ्य-पुस्तकें तथ्यों के संकलन के रूप में प्रयुक्त नहीं की जानी चाहिए, जिनको छात्र हृदयंगम कर सके, वरन् वे मौलिक सूचनाओं के भण्डार के रूप में प्रयुक्त की जाएँ, जिनको छात्र विभिन्न सक्रिय ढंगों से प्रयोग में ला सके।"

- टेक्स्ट बुक कमेटी ऑफ सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑफ एड्यूकेशन की रिपोर्ट के अनुसार, "वर्तमान शिक्षा प्रणाली की पाठ्यपुस्तक विहीन अवस्था की कल्पना ठीक वैसी ही है जैसी 'डेनमार्क के राजकुमार' के बिना 'हैमलेट' की कल्पना करना।" वास्तव में पाठ्य- पुस्तकें सहायक साधनों के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। सभी विषयों के शिक्षण कार्य में पाठ्यपुस्तकें एक सफल सहायक और उचित मार्गनिर्देशक के रूप में कार्य करती आ रही हैं। पाठ्य पुस्तकों की उपयोगिता निम्न बिंदुओं से स्पष्ट की जा सकती है-

- कक्षा शिक्षण के लिए आधार।
- शिक्षक को संपूर्ण सत्र के लिए व्यवस्थित पाठ्य सामग्री प्राप्त होती है।
- पाठ्यपुस्तक शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के लिए प्रतिदिन की कार्य प्रगति के प्रति सचेतक का कार्य करती है।
- बालकों को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहन मिलता है। उन्हें पाठ्य विषय संबंधी आवश्यक सामग्री एक स्थान पर एकत्र मिल जाती है और वे उसे अध्ययन द्वारा भलीभाँति आत्मसात कर सकते हैं।

स्वयं अध्ययन करना

REET 2025 L-1&2 हिंदी शिक्षण अधिगम सामग्री

समूह में पढ़ना

- सामूहिक शिक्षण व्यवस्था में पाठ्यपुस्तक बहुत ही आवश्यक शैक्षणिक उपकरण है।

टॉपिक — 4 व्यक्ति

- छात्रों को लिखे हुए तथ्यों और विचारों को समझने और व्याख्या करने की शक्ति प्रदान करती है।
- छात्रों को थोड़े समय में अधिक बातों की जानकारी देती है। इनसे ज्ञानोपार्जन में सहायता मिलती है।

ज्ञान का विकास

9818489147

अच्छी पाठ्य पुस्तक की विशेषताएँ-

- **भाषा व शब्दावली -** पुस्तकें सरल व स्पष्ट भाषा व सरस ढंग में लिखी हुई होनी चाहिए। अच्छी शैली का तात्पर्य सरलता, सजीवता, तर्कपूर्णता और भाव-प्रकाशन की स्पष्टता से है।

- **उपयुक्त विषय सामग्री-** पाठ्य पुस्तक की विषय सामग्री छात्रों की मानसिक उम्र के अनुकूल होनी चाहिए। विषय सामग्री सूचना प्रदान करने वाली और छात्रों के व्यावहारिक प्रयोग के लिए उपयुक्त होनी

चाहिए। पाठ्य सामग्री में विभिन्नता के साथ-साथ क्रमबद्धता भी निश्चित होनी चाहिए।

- प्रत्येक पाठ्यपुस्तक की विषय-सामग्री सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित होनी चाहिए।
- पुस्तक का लेखक योग्य व अनुभवी हो।
- जिस कक्षा के लिए लिखी गई हो उसके स्तरानुसार हो।
- अध्यापकों के व्यक्तिगत अनुभव व तथ्यों की यथार्थता पर जोर दिया जाना चाहिए।

- विषय वस्तु छात्रों के दैनिक जीवन की आवश्यकताओं, उनके प्राकृतिक- सामाजिक पर्यावरण तथा रुचि से सम्बन्धित होनी चाहिए।
- पाठ के अन्त में अभ्यास एवं पुनरावृत्ति के लिए प्रश्न, आवश्यक समस्याएँ, नवीन समस्याएँ व प्रदत्त कार्य (Assignments) के साथ ही पाठ का प्रारम्भ परिचय व अन्त सारांश से होना चाहिए जिसमें मुख्य मुख्य बातें दोहराई गई हों।